

कषयिष्टुतिउवृयाम॥मभुवि
 उमृमाकीति॥मगुंरुतिरिमु
 उ॥३॥रुयमुंमुपरउंमे
 पुत्रेदंमजरषाः॥येयामृदंरु
 मते॥कुदुयामृमिलायवमा॥
 ३५॥मुवामृवामृवदुवमि
 पुतिउवादिताः॥निचुमुव
 मामकुं॥उतेमुःपतरंनकिमा
 ॥३६॥यतेवापुपुमिभजे॥मि
 द्वावठेहृममकीम॥उमामृति
 पुकेत्रेय॥यमुयततनिमय
 ३७॥मापमुःपिममेदद॥लठ

ॐ
 गी
 ॐ
 ०५

लोहेराघाणये॥३३॥उतेयकुप
 यष्टुभ॥नेवंपापमचपुमि॥३३
 ल्पातेठिदिताभास्तु॥चुष्टिदे
 गेष्टिमंम॥३३॥वस्तुयुक्तेयया
 पाऊ॥कमचक्षुजभूमि॥३३॥
 नेजठिरुभनामेभि॥पुष्टवयेन
 विष्टुते॥पुष्टमपुष्टुपुष्टु॥३३॥
 यतेमजतेरुयाता॥३३॥वृचभा
 याष्टिकचुष्टि॥नेकैवकुमरु
 न॥वस्तुमापुष्टुनतुष्टु॥वस्तुये
 वृचभायिनभा॥३३॥याभिभं
 पुष्टितंवाभं॥पुष्टुवस्तुविष्टुष्टुः
 वस्तुवस्तुताः॥पाऊ॥नवस्तु

तिवादिनः॥२१॥ कभाङ्ग
 जपन एव कम्पलपुमम
 क्रियाविशेषचलं॥२२॥ सुद
 गतिपुति॥२३॥ सुदपुमकुनं॥
 उद्यपुतुमउमभा॥ वृवभाय
 क्रिकवृष्टिः॥ मभायेनविगीयते
 ॥२४॥ सुगुष्टविषयवेष॥ निमृ
 सु॥ ववापुन॥ निमृष्टेनिमृष्ट
 सु॥ निदेगद्वेमसुद्वान॥२५॥
 यावानकुपुमपात्र॥ मवतःमपु
 उरुके॥ तावात्रवेधवेमपु॥ वृष्ट
 ॥ सुविस्तृतः॥२६॥ कम्पट्टवा
 ठिकारमु॥ भाटलेपकमाम

कर्मफलजडु॥ मृतं भवेत्तु
 च॥ १॥ योगः कुरु कर्म
 मन्त्रं कुरु यत्नं॥ भिक्षु भिक्षुः भिक्षु
 वृ॥ मम भुंक्तु मृतं॥ २॥ मृतं
 वरं कर्म॥ वृद्धि योगः सुनयनं॥ वरं
 मृतं॥ भिक्षु॥ ५७॥ फलजडुः
 ॥ २९॥ वृद्धि यत्नेन जडु॥ उरु
 मृतं उरु भुंक्तु॥ उरु मृतं गाय यत्नं
 मृतं॥ योगः कर्म के मलभा॥ ५०॥
 कर्म एव वृद्धि यत्नं॥ फलजडुः म
 नीधिः॥ ॥ मृतं वृद्धि विनिमयः॥
 पुरुषा सुतु मयभा॥ ५०॥ यत्नं
 उरु मलकलिलं॥ वृद्धि वृद्धि उरु मल
 उरु मल कुरु भिक्षु वरं मृतं मृतं

म॥५९॥ नृतिविपुतिपत्र
 भूभृतिनिष्ठल॥भमपैवम
 वृद्धि॥भुमयेगभवपुमि॥५९॥
 मृत्तनतिवाम॥भ्रुतपुष्टमृक
 रुपा॥भमपिभूभृकेमव॥भ्रुत
 णीःकिंप्रुथयेत॥किमभीतवृणत
 किम॥५९॥तिस्त्रीरुगवतुवा
 म॥पुण्णजतियमकमभव
 दंभनेगतन॥भुद्धैवद्वन
 उष्ट्र॥भ्रुतपुष्टभुद्धैवद्वन॥५९॥
 मृत्तनतिविपुतिपत्रः भमपिपविग
 उष्ट्रः॥वीतगगलवैरुपःभ्रु
 उष्ट्रभ्रुतिमृते॥५९॥यःभव

गा.
दि.
००

ॐ नमः शिवाय ॥ सुतुङ्गपुत्रमुखा
 गाननरुतिनकुम्भि ॥ उभृपुल्लु
 तिष्ठित ॥ ५१ ॥ यमभंजवतम्
 यं ॥ क्रुमेङ्गनीवभवमः ॥ ५२ ॥
 यन्मिद्याकैरु ॥ सुभृपुल्लुति
 क्षित ॥ ५३ ॥ विषयाविनिवृत्त
 त्तु ॥ निगलरभृरुजिनः ॥ मभव
 लंरभेपुमृ ॥ परंरुभृनिवृत्त
 ५४ ॥ यत्तुपिदिक्केतुय ॥ पर
 यभृविषमिः ॥ ५५ ॥ मियाभृम
 षीनि ॥ जगत्पुमरुभनः ॥ ५६ ॥
 तनिभव ॥ मंयभृ ॥ यत्तु

上

七

मवहुतां॥ उभंरगति॥
 भी॥ यभंरगतिहुतां॥ मनि
 मापसृते भुवः॥ ७७॥ सुपुद
 मा॥ ममलपुतिपुं॥ मभुमपः
 पुविमत्रियहुता॥ उभुहुमायं
 विमत्रिमवे॥ ममात्रिमायेति
 कभकभी॥ १०॥ विजयकभा
 तः॥ मव॥ पुमासुरतिरिः भुज
 निहुमेनिजहुतः॥ ममात्रिमहि
 गहुति॥ १०॥ ममावहुतीभि
 तिः पातु नैतं पुपुविमहुति
 मिहुतां मभुतकलेपि वहुति

ॐ
 श्री
 वि
 ०३

ॐ नमः ॥ ११ ॥ ॐ नमः ॥
 कगवद्गीता मुपनिषद्
 द्विविष्टयं ये सापुसीद
 मल्लनमेवाके भापुयेगेम
 मन्वितीयेष्टयः ॥ १॥ मुल्ल
 नुवाम ॥ हयभीके कुम्भ ॥
 भउवकुल्लनान ॥ उकुम्भ
 नियेगेम ॥ नियेगायभिकेम
 व ॥ ० ॥ वृभिसुल्लेववास्त
 वृभिसुल्लेववास्त
 निविष्टयभीचमे उकेकं वम्
 भा ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

भा॥१॥ॐ श्री ठगवा ॥
 ॥लेकेभिन्नि विठनिष्ठ॥परमे
 कुभयान्य॥एनयेगेनभाएनं
 कद्रयेगेनयेगिनभा॥३॥
 नकद्रउभनरभा वैधुदुंभ
 नयेमुते नमभंनुभनठव
 भिन्निमभठिगमुति॥४॥नदि
 कस्मिन्नु मपिएउतिष्ठक
 द्रतउ॥कदउरुवमःकद्र
 भवःपूतुतिऐनुल्लिः॥५॥क
 द्मिन्नि यालि मंयभ॥यमुमुभ
 नभाभनन॥६॥यि यानुवि

छि
 गी
 ५
 ०७

ॐ ॥ मिष्टा मारः मउमृ
 उ ॥ ५ ॥ यमिष्टि यमिभन
 भा ॥ नियमृ रउते लन ॥ क
 ॐ मिष्टि यैः कर्म ये गम ॥ म कः
 मविमिष्टि उ ॥ १ ॥ नियतं क
 म कर्म ॥ कर्म ए ये कर्म
 ॥ ॥ मरी गय मृ धिम उ ॥ न
 मिष्टि कर्म ॥ ३ ॥ यम
 कर्म ॥ २ ॥ लेके यं कर्म
 रउतः ॥ उम कर्म के उय
 म कर्म मम मर ॥ ७ ॥

मज्जिमसुल्लः पूरः मज्जिमसुल्लः
 वासपूरपतिः सुनेनपूर
 विष्टुष्टु॥ मधवेष्टुष्टुकमपु
 क॥०॥॥ देवाष्टुष्टुयताष्टु
 उमवाष्टुष्टुयतुवः॥ परम
 रंष्टुष्टुयतुः॥ मयः परमव
 पुष्टु॥००॥॥ पुष्टुष्टुगतिष्टु
 देवा॥ पुष्टुष्टुयल्लुष्टुविष्टुः
 उमष्टुष्टुयल्लुष्टुयल्लुष्टु
 नष्टुष्टुयल्लुष्टुयल्लुष्टु
 मिष्टुष्टुयल्लुष्टुयल्लुष्टु

五
九

CC-0 Shashi Shekhar Toshkhani Collection. Digitized by eGangotri

भाऊ मणीवति ॥०१॥ य
 भुङ्गति रेव भु ॥ ०२ ॥
 उषुभानवः सुङ्गरेवम
 मनुषुभुष्टकदंनविष्टुते
 ०१ ॥ नैव उष्टुष्टुते नके ॥
 नष्टुते नैव क सुन ॥ नम
 भुमवष्टुते ॥ क सुष्टु
 वृष्टुष्टुष्टु ॥ ०३ ॥ उष्टुष्टु
 मनुः मनुष्टुष्टुष्टुष्टु
 मनुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टुष्टु

ॐ
 गी
 ३
 १०

पगभायेतिपुनः॥०९॥कम्
 वदिमंभिदि॥भाभिउाए
 कयः॥सोमसूजमेवपि॥
 मंपसृकडुमहमि॥१॥यसृम
 गतिमेषु॥भुतमेवउरेणः॥
 मयडुभां॥कुमउ॥लेकभु
 मउवडुउ॥१०॥नमेपाकुभिकु
 वृ॥विधलेकधकिहिन॥नन
 वपुभवपुवृ॥वडुमवमकम
 ॥११॥यमिहृदंनवडुयं॥सु
 कमउउमिउः॥मभवसुनव
 डुनवडुउ॥मउपुपकुमव

उ श्रुमुःतुम् ॥ मष्टुं कम्
 मणीपलम् ॥ १७ ॥ मष्टि कु
 उष्टिं वंभा ॥ मष्टि यल्ल
 मष्टि विमुःपुया ॥ कलेपि
 मष्टि ॥ उ विमु द उ मष्टि
 ७ ॥ ७ ॥ ॥ उष्टि मीठग
 वष्टि उष्टि मष्टि वष्टि वि
 मष्टि यंगये मष्टि मष्टि मष्टि
 मष्टि मष्टि विष्टि नये गे न मष्टि
 पुष्टि ॥ मष्टि यः ॥ १ ॥ मष्टि नष्टि
 वष्टि ॥ ७ ॥ उष्टि किं उष्टि कि
 मष्टि ॥ किं कम् मष्टि मष्टि

ॐ
 छि
 गी
 अ.
 २५

अठि कुतं किंये कुं॥ भठि कै
 वं किभमृते॥०॥ अठि यस्तुः
 केवं के इ॥ के जे मित्र पभु
 न॥ पूया कलेमकवं॥ हू
 येमिनि उकुतिः॥१॥ छि मी
 कगवतुवम॥ अरुं वरुप
 रमं॥ भुवेष्टुममृते॥
 कुत रुवे सुवकरे॥ विभुतः
 कभं हूतः॥३॥ अठि कुतं
 करे रुवः॥ भुय सुठि मैव
 उम॥ अठि यस्तु जभवाइ॥
 के के के हं वर॥ भाअ

उकलेमभमेव॥भरु
 क्कुकलेवरुम॥घःपूयति
 मभम्लवं॥घातिनभुइमंस
 यः॥यंयंवापिभरुक्कवं॥ह
 राहुकुंकलेवरुम॥उंतमे
 वैतिकेकुंय॥भरुतम्लव
 रुविउः॥उभरुक्कवैधका
 लध॥भभरुभरुयपुस॥
 मयदिउभनेरुदि॥भमेवै
 धुधुमंसयः॥१॥भरुभये
 गीकुंन॥मंतभनहगामि
 य

2

三

सत्रियसु तयेवीउगगाः
 यमि सुते बुद्ध मदं मगति
 उकुपदं भसु जे प्रवहु
 ००॥ भवसु गलि भंयभु
 भने हलि निमसु म॥ भु
 शुणया कुनः प्र॥ भा
 भुते ये ग णरुभा
 ॥ विमिह क रुं बुद्ध ॥
 वृ- ऊर कुभर भुग॥ यः
 पूया तितु राहुं ॥ मया
 उधर भं गतिम॥ ०३॥

ॐ
सु. गी.
३

मृनृमृताः भउतं॥येभं
 मृगतिनिहमः॥उभृजं
 मलरःपाऊ॥निहृयऊ
 मृयेगिरः॥०भा॥भाभपेटु
 पुनल्लर॥मुपलयभम
 मृउभ॥नपुवतिभजऊ
 नः॥मंभिमिंपरभंराताः
 ०पा॥मुकुरुवकलेक
 पुनरावतिनेलन॥भभ
 पेटुकेतेय॥पुनल्लर
 नविमुते॥००॥मजभ

युगपद बुभ ॥ जद सुफु ॥
 विभुः ॥ गडिं युगभ भूतं
 उदे गडि विभे साचः ॥ ७१
 भवुता सुतयः भव ॥ यैरु
 वहु जगमे ॥ गडुगमे
 लीयते ॥ उदैव वुतभ
 लुके ॥ ०३ ॥ कुत गभः भ
 पचायं ॥ कुत कुत पली
 यते ॥ गडुगमे वसः प
 कु ॥ थुरु वहु जगमे ॥
 ॥ ०७ ॥ पगभु भूतु व

ॐ
 गी.
 अ.
 ५३

ॐ॥ वृत्ते वृत्तमै न तनः॥ १५ः
 मम चेषु तेषु॥ नमस्तु
 विनम्रति॥ १॥ अष्टौ कुरु
 रतुतु॥ मुभाय परमं
 गतिम्॥ यं धृष्टनिवृत्तु
 तमुभयमेव॥ १०॥ पर
 मधमपरः पातु॥ कुरुल
 हृष्टनृया॥ यष्टुतः भु
 निरुता नि॥ च नमचमि
 मंतुतम॥ ११॥ यष्टुकले
 वृत्तवृत्तिमावृत्तिमै वये

गिनः॥ पूयाता यत्रितंका
 लं॥ वक्षमिष्ठत द्रुत॥ १३॥
 मृगिहृतिगदः सुक्तः॥ ४
 मभाउतु गयम॥ ३५
 याता गच्छति॥ वृष्टवृष्टवि
 मेष्टनः॥ १४॥ प्रभे गतिमुष
 दक्षः॥ ४५॥ मभाउति य
 म॥ ३५॥ मभाउति य
 पूष्टनिवतुते॥ १५॥ सुक्त
 दक्षगतीकत॥ १५॥ मभाउति
 सुतेमते॥ १५॥ मभाउति

ॐ
 श्री गी.
 २७

+
 म

ॐ भा॥ हृयाचतुत्तपुनः॥ १७॥
 नैत्तम्॥ तीपकस्रनहेगीम
 हृत्तिकस्रन॥ उभद्रवध
 कलेष॥ योगयुक्ते कवज्ञ
 न॥ ११॥ वेदेषु यस्मिन्पुत्र
 मेव॥ सनधुयद्रुष्टलं
 प्रमिधुम॥ अहृत्तिउद्रुच
 मिहंविमिद्रु॥ योगीधरंभु
 नभपैत्तिम॥ १३॥ ७॥ ८॥
 छिःत्तिमीठगवज्ञीताम
 धनिधद्रुद्रुविमृष्टाये

गमभूमिदधुल्लनभंवम्
 कर्गनिर्दमेनाभधुभेष्टयः
 ३॥५॥ उम्रीरुगवत्रवम्
 उमं उते गुह्रतमं॥५॥
 भुनभुयवे॥५॥ विह्वनभ
 जिउं॥५॥ यद्वभेष्टमेष्टु
 ३॥०॥ गगविष्टुगगगु
 हं॥५॥ पवित्रमिहभुभम
 ५॥ दक्षवगभंष्टु॥५॥
 कुरुभवयम॥५॥ ५॥
 एवः५॥ ५॥ ५॥

ॐ
 गी.
 न.
 य.

रतुप॥सुप्रभंनिवतुते॥
 मृदुभंभगवतुनि॥३॥भय
 उतंमिहंभवं॥एगमवृकु
 भुतिन॥भक्तुनिभवकुतानि
 नमहं उधुवभितुः॥२॥न
 मभभितुनिकुतानि॥यसुमये
 गमैरुगम॥कुतकुतमकु
 उमु॥मभभक्तुकुतवकः॥य
 यषाकसभितुतेनिहं॥वयः
 भवतुमेभजन॥उषभव
 भितुतानि॥भक्तुनीदुपण

रय॥॥भवकुतनिकैत्रेय
पूतडिंयविभभकीम॥क
न्यद्वयेयनभुनि॥कन्यरे
विभरभृजभ॥१॥पूतडिंभ
भवप्रयह॥विभरभिपुनः
पुनः॥कुतगभमिभंनकु॥
भवमैपूतउवसाउ॥३॥न
नमभंननिककु॥निवप्र
त्रिणनकुय॥उमभीनवम
भीन॥भमकुंउधककु॥६
भयापृष्ट॥पूतडिः॥भय
उममममम॥नकुनन

ॐ
न. गी.
५०

ॐ

न के कुं य॥ सा ग वि प रि व तु
उ॥ ०॥ सु व र न त्रि मं भ
रु॥ भ न धी उ व र भ मि उ
भ॥ प रं रु व भ र न तु॥ भ
रु उ भ न स र भ॥ ००॥ भि य
स भि य क रु ॥ भि य रु न
वि स उ भः॥ ग रु भि भ भ
री सै व॥ पू न तिं भे जि ती मि
तः॥ ०१॥ भ न रु न भु मं
पा रु॥ रु वी पृ ति भ मि उः
रु ए वु न रु भ न भे॥ रु व रु
तु रि भ वृ य भ॥ ०७॥ भ

ਤੰਕੀ ਤੁਧੁ ਤੇਮਾਂ॥ ਧਤਤੁ ਸੁਸੁ
 ਸੁਵਤਾ॥ ਨਮਸੁ ਤੁਸੁ ਮਾਂਰ
 ਕੁ॥ ਨਿਹਧੁ ਤੁਤਧ ਮਤੋ॥
 ੦੩॥ ਲੂਨਧ ਲੂਨ ਸਾਪੁ ਤੇ॥ ਧਧ
 ਤੇਮ ਮਧ ਮਤੋ॥ ਸਕਤੁ ਨਧ
 ਧਤੁ ਨ॥ ਰਧੁ ਧ ਵਿਸੁ ਤੇਮ ਧ
 ਮ॥ ੦੪॥ ਸੁਧੁ ਰੁਤੁ ਗੰਧ ਧੁ
 ਮੁਧੁ ਮਧ ਮੋਧ ਮ॥ ਮਤੋ
 ਮਧ ਮੇਸੁ ਮਧ ਮਧਿ ਗੰਧੁ ਤਮ
 ॥ ੦੫॥ ਧਿਤੁ ਮਧ ਮੁਧੁ ਗੰਧੁ
 ਮਾਤਾ ਧ ਤੁਧਿ ਮਧ॥ ਵਿਸੁ
 ਧ ਵਿਸੁ ਮੇਸੁ ਗੰਧੁ ਮਧੁ

ॐ
 गी.
 न.
 ५९

ॐ वस ॥ ०१ ॥ गतिरुत्तुपुक्तु
 भाक्षी ॥ विचमः सरं भुक्त
 उ ॥ पूरकः पूलय भुक्तं ॥ नि
 पनं चीरा मवृभयम् ॥ ०३ ॥
 उपाभुक्तमं वं ॥ निगुलु
 धुक्तु रमिमा ॥ सुभुतं सैव
 भुक्तु ॥ भक्तमस्तु भक्तु
 ॥ ०७ ॥ ॐ विष्णुभक्तमस्तु
 उपाया ॥ यस्तु विष्णु भुक्तु
 पूरकयुक्तु ॥ उपायमाभक्तु
 भुक्तु लेकुभक्तु विष्णु
 विष्णु वं न ॥ १॥ ३

उं कुं भुजलेकं वै सलं
 कीं पृष्टं भुलेकं वै सति
 एवं इयी पद्मभनूपन॥
 गता गतं कामकमलरुतु
 ॥१०॥ मृगहृदि तु यत्तेभं
 येन नः पदपामते ॥ उं
 निरुक्ति यत्तु नः ॥ येन हं
 वज्रभुज ॥ ११ ॥ येन हं
 वतारुतु ॥ येन तु स सुय
 विताः ॥ उं पिभामेव के तु
 य ॥ येन तु विधिप्रवकम ॥

चि
 गी.
 न.
 ५३

॥१३॥ सुहंदिभवयल्लुनं
 केकुसपुकु रेवम॥ ननुभ
 भनिरुननु॥ उवैरतसुव
 त्रिउ॥ १॥ यातिरुववुत
 र्वेव॥ चिदृदृतिधिरुवुतः
 कुतैरियातिरुतेष्ट॥ याति
 भसुशिवेपिभाम॥ ५३५
 पंठलंतेयं॥ येमरुकुप
 यसुति॥ उरुहंरुपुपुत
 भसुभिपुयतकुनः॥ १३॥
 यकु रेधियरुमभि॥ यल्लुने

ਖਿਰਨਾ ਮਿਧਤਾ॥ ਧਤੁਪ ਮੁਖਿ
 ਕੇ ਤੁਧ॥ ਤਤੁ ਮੁਖ ਮੁਖ
 ਮ॥ ੭੧॥ ਸੁਰ ਸੁਰ ਫਲੈ ਰ
 ਵੰ॥ ਮਿਥ ਮਿਥ ਰਵੰ॥ ਮੰ
 ਹੁ ਮਧੇ ਗਧੁ ਤਾਤੁ॥ ਵਿਮੁਕੁ
 ਮਾ ਮੁਖਿ ਮੁਖਿ॥ ੭੨॥ ਸਮੇਯੰ ਮ
 ਵਰੁ ਤੇਖ॥ ਨ ਮੁਖਿ ਮੁਖਿ
 ਧ॥ ਧਰੁ ਰਾਤਿ ਤੁਮੰ ਰਾਤੁ
 ਮਧਿ ਤੇ ਤੇਖੁ ਸਾਖੁ ਮ॥ ੭੩
 ਸੁਖਿ ਸੁਖੁ ਸੁਰ ਸਾਰੇ॥ ਰਾ
 ਤਮਾ ਮਨੁ ਰਾਕ॥ ਮਾਧੁ
 ਰ ਮਮ ਤੁਰੁ॥ ਮੁਖੁ ਸੁਖਿ

९
 ॐ
 गी.
 न.
 य.

डेदिमः॥३॥दिपुंरुवति
 ण्माङ्ग॥मसु सुडिनिगसु
 डि।के डेयपुडिनीदि॥नम
 सुकुःपुं सुडि॥३०॥मंदि
 भाकुवृधसिडायेपिमुःध
 पयेनयः॥भिये वैष्टुमुषा
 सुम्॥मुधियात्रिपरंगति
 भा॥३१॥किंपुनवृद्धःध
 टा॥रु कुगणद्वयमुषा॥
 मुनिहमभापंलेकमिमंभ
 पुठणमुभामा॥३३॥भमन
 कवमसुके॥भसुणीभान

मभुङ् ॥ मभैवैधुमिय कुँव
 मभुङ् नं मभु गय ॥ ७८ ॥
 ॥ ८ ॥ छिडाडिमीठ व मीठ
 भुयनिभुङ् कुङ् विमृयये
 गमभुमीठ भुङ् नभुङ्
 गमविमृगमगुङ् येगेन
 भनवभैमृय ॥ ७९ ॥
 छिमीठ गवत्र चाम ॥ ८० ॥
 कुयपवभजवडे ॥ ८१ ॥
 भैयनं वमः ॥ यकुं धीय
 भ ७ य ॥ व कुमिडिउका
 भुय ॥ ८२ ॥ नभैविमृयग

डि
 रु. श्री
 यथ

व

ॐ पूरुवं न भज ह्ययः॥ सुज
 भमिदिदेवने॥ भज ह्रीं उम
 भवमः॥ १॥ ये भमभनभनमि
 म॥ वेडिलेकभजे सुगभा॥
 सुमभुठः मभहुध॥ भवपयैः
 प्रभमृते॥ ७॥ सुमिल्लु नभभेजः
 कभमहुठमः मभः॥ भपंयुः
 पंठवेठवे॥ रुयं मरुयभ
 म॥ २॥ सुजिं भमभतु रुधि॥
 सुपेरुनेयमेयमः॥ रुवति
 रुवा रुतांने॥ भतुपवधुव

सि० ॥ ५ ॥ भ० द० यः भ० पु०
 वे० ॥ म० द० रे भ० व० भु० षा० ॥ भ०
 मू० वा० भ० न० भा० ए० त० ॥ ये० धे० ले
 कः० भः० पू० एः० ॥ १० ॥ १० तुं वि० कु
 ति० ये० गे० म० ॥ भ० भ० ये० वे० ति० त० दू
 तः० ॥ भे० वि० क० भ० न० ये० गे० न० य
 ए० ते० न० इ० भं० म० यः० ॥ १० ॥ म० लं
 भ० व० भृ० पू० रु० वे० ॥ भ० तुः० भ० च० पू
 व० तु० ते० ॥ ७० ति० भ० दू० क० ए० तु० भं
 व० ए० रु० व० भ० भ० वि० तः० ॥ ३० ॥ भ० म्भि
 त० भ० म्भ० त० पू० ॥ ७० वि० ए० य० तुः० ५

ਤਿ
 ਗੀ.
 ਕ.
 ਯੇ

ਰਮ੍ਹਰਮ॥ ਕਥ ਧਤੁ: ਸੁਮੰਨਿ
 ਤੰ॥ ਤੁਖ੍ਰਿਤਿ ਸਰਮਤ੍ਰਿਸਾ॥ ੭॥
 ਤੇਖੰ ਮਤ ਤਧੁ ਕੁਨੰ॥ ਨਲਾਤੰ
 ਪ੍ਰੀਤਿ ਪੁਰਕਮ॥ ਨਲਾਮਿਰੁ ਸਿ
 ਯੇਗੰ ਤੰ॥ ਯੇਨਮਾ ਮੁਪਧਾਤ੍ਰਿਤੰ
 ॥੦॥ ਤੇਖੰ ਮੇਵਾਨੁ ਕਮ੍ਹੁ ਤੰ॥
 ਮਯਮਲ੍ਲੁਨੰ ਤਮ:॥ ਨਾਸਾਧਾ
 ਮ੍ਹੁਤ੍ਰੁ ਨੁਵੰ ਮ੍ਹੁ॥ ਲ੍ਲੁਨੰ ਸੀਪੰ ਨ
 ਮ੍ਹੁਤੰ॥ ੦੦॥ ਸ੍ਰਾਜ੍ਜੁਨੰ ਤਵਾਸਾ
 ਪਰੰ ਰੁਕ੍ਸ਼ੁ ਪਰੰ ਧਮਾ॥ ਪਵਿਤ੍ਰੰ ਪ
 ਰਮੰ ਨੁਵਾਨਾ॥ ਪਨੁਖੰ ਸਾਸੁਤ੍ਰਿ

वृ॥ भक्तिमेव भक्तं विदुः ॥ ७९
 सुदुःखं भयः भवे॥ मेव
 द्विजगत्सु ॥ अभिते मेव
 लेखुः ॥ भयं मेव वृषीषिभिः
 ॥ ७७ ॥ भवमेतं सुतं भवे॥ य
 मं वदन्ति केसवः ॥ न हि ते
 नृगववृद्धिः ॥ विमृष्टं वा न
 नवाः ॥ ७८ ॥ भयमेव नृप
 नं ॥ वेदं पुरुषोत्तमः ॥ कृत
 क्तवन्तु ते मः ॥ मेव मेव
 गच्छते ॥ ७५ ॥ वक्तुं भक्तं भुमे

ॐ
रु. गी.
५१

धे॥॥॥ विवृष्टाङ्गु विवृष्टयः॥
 यावि विवृष्टि विवृष्टक॥॥॥ विवृ
 मं वृष्टि विवृष्टि॥॥॥ कषं विवृ
 मं ये विवृष्टि॥॥॥ मं मरुधरि विवृ
 यन॥॥॥ कषं कषं मरुधरि विवृ
 विवृष्टि गवधरि॥॥॥०१॥ वि
 मरुधरि विवृष्टि॥॥॥ विवृष्टि
 मरुधरि विवृष्टि॥॥॥ कषं कषं
 विवृष्टि॥॥॥ विवृष्टि विवृष्टि
 ॥॥॥ विवृष्टि गवधरि॥॥॥
 विवृष्टि कषं विवृष्टि॥॥॥

विष्णु उयः॥ पूणवृत्तः कुरु मे
 धृ॥ न भूते विभु रभु मे॥ ०७॥
 अहं भाङ्ग गु न के स॥ भवतु
 तामय भित्तः॥ अहं भा मि सुभ
 पं स॥ कु त न भ त्तु ए व स॥ ९॥
 सु मि त्तु न भ हं विष्णु॥ ह्येति पं
 र वि रं सु भान॥ भ गी मि द्भु त्तु
 भ मि॥ न कृ त्तु भ हं स सी॥
 १०॥ वे द नं भा भवे दे मि॥ न
 वा न भ मि वा भवः॥ उद्दि या
 न्भ न सु मि॥ कु त्तु न भ मि मे

कं डि
गी
रु.

५३

उत्त॥११॥ नमो नमो मङ्गल
भि॥ विदुमेयकृगृभाभा॥ व
मुनां धाव सुभि॥ भेनः सिपरी
उभजभा॥१३॥ परे पभं म
भापुं भे॥ विस्मिधाऊवृजभृति
भा॥ भेननीनं भजं भृजः॥ भर
भामभि सगरः॥१३॥ भज
दी नमो गुरं॥ गिराभभृक
भक॥ यस्तुनं एयं स्तेभि॥
भुवरा नमिभालया॥१४॥
सुसुक्तु भववृक्ष॥ नवदी

ॐ नमः ॥ गुरु कृष्ण
 इव वसिष्ठं कथितेभ्यः
 ७॥ उच्चैः स्वभक्तानां ॥ वि
 श्वभक्तानां उच्चैः ॥ गुरु
 उगल्लु ॥ नमः ॥ नमः
 विभक्तानां ७७ ॥ सुप्रसन्नमन
 वसु ॥ उच्चैः स्वभक्तानां
 क ॥ पूज्यं स्वभक्तानां ॥ म
 द ॥ उच्चैः स्वभक्तानां ॥ ७७ ॥
 सुप्रसन्नमन ॥ वसु ॥
 यान् भक्तानां ॥ विभक्तानां

ॐ
ॐ गी.

५७

भामि॥ यमः भयमता भय
मा॥ १७॥ युद्धात् सुभिर्देव
नं॥ कलकलयता भयमा॥
भगालं समुगैर्देव॥ वैत
तय सुयक्षिणम्॥ ३॥ भव
नः भवता भमि॥ रमः समु
हता भयमा॥ रायलं भका
सुभि॥ भूतमा भमिस्तु
वी॥ ३०॥ भगालं भमिस्तु
सु॥ भयं मैव भयमास्तु
उ विष्ट विष्ट नं॥ वामपै

वरुडभजभा॥३३॥श्रुत्वा
 लभकरेभि॥सुसुःभभा
 भिकभृम॥श्रुजमेवक्षयः
 काले॥ण्डांविष्टेभापंः
 ॥३३॥भृदुःभवजगस्रद
 भसुवस्रुविष्टुभा॥की
 त्रिःसीवज्ञनरी॥भृ
 त्रिष्टेणपतिःक्षभा॥वृजदु
 भतषाभाभं॥सायडीसु
 क्षभाभजभा॥भाभाचंभन
 सीष्टेज॥भृदुंभृभाक

ॐ
गी.

ॐ
५.

१॥३५॥सुते कल यत भभि
तेभु रभिर भजभा ॥ एयेभि
वुव भयेभि ॥ भवुं भवुवता
भजभा ॥ वृक्षी नंवा भुवेभि
पा भव नं पन भुयः ॥ भनीना
भयुं वृभः ॥ कवीन भुमनाक
विः ॥ ३५॥ ॐ भ भयत भ
भि ॥ नीति रभिर गी धत भ
भो नं नैवा भिर गुहानं ॥ भुनं
भुनवता भजभा ॥ ३५॥ य
भुधि भव भु तं नं ॥ वी संतु

कभल्लन॥ नउमभिवि नयमु
 नयकुतं मरमरभ॥ ७७
 नउमभिवि नयमु॥ विकुती
 नयपगुय॥ मयकुतं मउःभे
 कु॥ विकुते विभुरेभया॥ ८०
 यमुसिकुतिमकुतं॥ मीमस
 लितमेवव॥ उतुमेववगसु
 वं॥ मभउते मभभुवभ॥ ८२
 मयवववववव॥ किंलून
 नउवव॥ विधुहमिमंत
 व॥ मेकं मेनभिविगउ॥ ९१

ॐ
 गी.
 ॐ

॥ ३॥ छिउति श्रीरुगवल्ली
 उभयनिषड् ॥ इन्द्रविमृष्टं
 योगसामुत्तरीनधूल्लभं वरं
 विकुटियोगेन भस्मभेषुयः

॥ ३॥ ०. ३॥ ६५ ३ ॥

सुल्लवतकमा ॥ २॥ छिभस्म
 रंगूलयचरभे ॥ गुह्यभष्ट
 इभंल्लुत्तमा ॥ यदुयेकुं वम
 मुन ॥ भिदेयं विगतिभम ॥ ०॥
 रुवाधुयोगि कुतानं ॥ मूडे
 विभुरसेभया ॥ इतुःकभ

लपडूकु॥भाद डूभधिसव
 यभा॥१॥एवमेतसुषाकुव
 भाङ्गनंयरभसुग॥सुधुभि
 सुभिउकुथा॥मैसुगंयनयेउ
 भा॥२॥महमेयकिउसुहं॥
 भयामुधुभिउिपूठ॥येगसु
 रउतेमेहं॥एनयकुनभव
 भा॥३॥खिसीकगवववम
 थसुमेथाउकुथा॥सउमे
 वमजभूमः॥ननविणनि
 निवुनि॥ननवल्लठडीनि

म॥५॥सुमिहवमरुमन॥
 सिनेभरुतमुषा॥चक्रहम
 धुधुवलि॥५॥सुसुदलिठ
 रत॥१॥ॐकमुंमरुकुं॥
 धसुसुममरुमरुभा॥मम
 मरुगुरुकैम॥५॥सुहम
 धुमिसुमि॥१॥३॥मम
 मसुधु॥मनेनैवममरुधु
 मिहंमममिउमरु॥५॥सु
 मयेगमैसुमभा॥३॥मम
 उवाम॥५॥मममरुउतेमम

नमः॥ मध्वीसुभवनरगं सुदि
 वृत्ता॥ ०५॥ सुनेकवद्रुग्गव
 कुनेत्रं॥ यस्तुमिदं भवतेन तु
 कुयभा॥ न तु नमस्तु नयुनभुव
 किं॥ यस्तुमिवि सुशरवि सुकुय
 भा॥ ०६॥ किरीटिनं गकिनेम
 स्ति॥ ०७॥ कुलो गमिभवतेमी
 युमनुभा॥ यस्तुमिदं सुविरीदं
 मभनु॥ सुधीधुनलकु सुति
 मधुमेयभा॥ ०८॥ सुमदग्य
 रमं वदि तदं॥ सुमभुपिपु

ॐ
गी.

(१०.
५६

मृपगंविठनम॥ वृमवृयः सा
सुतपुगोपु॥ मनत्रुवमुंथम
धेमतेमो॥ ०३॥ मृनरिमपुत्रु
मनत्रुवीद॥ मनत्रुवाकुं स मि
मुदनेत्रम॥ पसुमिबुं मीपु
तामवकुं सुतेराभाविमिमिं
उपत्रुम॥ ०७॥ सुवापुषिवे
रिभमत्रुं जि॥ वृपुं वृयैक
मिमसुमवः॥ रुधुमुतं रुप
मगुंतवेरं॥ निकरयं वृषि
उंमनत्रु न॥ १॥ मृमीमिदु

भुग्भसुविमडि॥कंमिस्त्री
 ताःप्राङ्गलयेग॥त्रि॥भुभु
 इङ्गाभजदिमिस्त्रुभसुः॥भु
 वडिङ्गंभुडिठिःपङ्कनाठिः
 ॥१०॥रुसूठिडुवभवेय
 मभापु॥विस्त्रेसिनेभरुड
 स्त्रेधुपासु॥गडुवयक
 भुग्भिसुभसु॥वीङ्गुडुं
 विभुडुस्त्रेवमवे॥११॥
 रुयंभजडुवङ्गुवङ्गुनेडुं

ॐ
गी.
(५)

भज रजि रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु
भा॥ रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु
लं॥ रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु
भुवन् रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु
सीधु भन कवत्तं॥ वृत्तु रज्जु
सीधु विमाल रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु
दिष्ट रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु
तिन विरु भिम भंम विधे
॥ ३५॥ रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु
भुवन् रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु रज्जु

ल भविठवि॥दिमेनरचनल
 केमसम॥पुभीरुदेवेमण
 विवामा॥७५॥सुभीसवेपुड
 गधुमुप्रः॥भवैःभजैवव
 विपालभः॥॥ठीधैमेः
 भुःउधुमुषभे॥भजभ
 सीयैरधियेणभुषि॥७॥
 वकुलिउडुगभ॥विमडि
 मंभुकगलविठयानका
 नि॥कमिडिलगममराउ
 रध॥भरुमकुमुलिउमड

मकु

ॐ
ग्री
ॐ

भाङ्गः॥११॥यवनमीनं चक्र
वेधवेगाः॥भभूमवेकमि
पाम्वति॥उवाउवाभीनन
लेकवीग॥विमत्रिवक्रुष्ट
ठिविमुलति॥१३॥यवाथ
मीपुंसुलनं पडङ्ग॥विमत्रि
नामायभभाम्ववेगाः॥उव
नामायविमत्रिलेक॥भुव
पिचक्रुलिभभाम्ववेगाः॥
१७॥लेलिहमग्भभानः
भभतु॥लेकभभगवृत्त

झेलमिः ॥ उलेठि गधर
 गधु मगं ॥ ठ मधुवे रापै
 उपडि विष्णुः ॥ ३० ॥ सुष्ट
 डिभकेठ वरगुधे ॥ न
 मेधुतेव वरगुमीर ॥ वि
 लुडमिष्णु मिठव तुमसुं
 नलिपुष्टमिठव पुवडि
 ॥ ३० ॥ ठिमी ठ गव न
 वम ॥ कलेमिलेकधा
 यरुवुडे ॥ लेममलु

क

ॐ
 गी.
 ७१

येण्य

भिजपूक्तुः॥८॥उपिद्वनठ
 विधुतिभवे॥यवभित्तः५
 हरीकेधुयेणः॥३९॥उभ
 दुभतिधुयमेलठ५॥मि
 द्वासदुद्धुगदुंमभसुभ
 भयैवैतनिजतः५वमेव
 निमित्तमातंठवभवभमि
 ॥३३॥सुंमनीधुंमराय
 सुवंस॥कलंतवद्वनधि
 वीरभगुग॥भयाजतंभुं
 रादिभाबुधिधु॥यष्टभुं

उभिरल सपदना ॥३४॥

भाङ्गयउवासा ॥ अउकुड

वमनंकेसवभृ ॥ ठाङ्गलि

वेपभफःकिरीटी ॥ नभभृ

दुङ्गयपवायुं ॥ भगमुं

सीतसीतभृ ॥ ३५ ॥

मुङ्गयउवासा ॥ भृनृ

भृकेसउवपकीडु ॥ रागपु

रुपुडुवरगुडेस ॥ रङ्गभि

सीतानिमिसेसुवति ॥ भवे

नभभृतिमभिसुमदुः ॥ ३६ ॥

८

ॐ
 गी.
 (१०.
 ७३

कभस्सुतेननभेग्नज्ज
 जरीयमेवुक्कलेधुमिक
 उ॥ अतनुमेवेसरागविव
 म॥ वृभकुरंभरुभतुदुरंय
 उ॥३१॥ वृभकिमेवपुं
 धःपुग॥ भृभभृविस्सुभृप
 रंनिपं॥ वेउभिवेसुम्प
 रंमणभ॥ वृयउतंविस्सुभ
 नतुदुप॥३३॥ वायुदमे
 शिवनः॥ ससगुः॥ पूर
 पतिमुंयुपिताभजसु॥ नभे

नमो भुमुमदभुनदु ॥ पैनसु
 येधिवभेनभमु ॥ ३७ ॥ नमः
 पुरभुमवधुमुतमु नमोभु
 उमवतवभव ॥ सुनतुवी
 दमिडविकुममुं ॥ भवेमभा
 पेधितुतेमिभव ॥ ४० ॥ भापेति
 भवपुमवधुमुं ॥ जेनधुमे
 याववधुभापेति ॥ सुनतु
 भदिभानंतवधुं ॥ भयापुभा
 मधुमेवधुपि ॥ ४० ॥ अ
 सुवधुभाभुमभुं ॥ वि
 धारसधुभवेधुमे ॥ अके

(सं.
 ७७
 ति
 गी.

+
 मे

रु

षवपुसुततुमके॥तुम
 येदुमजमपुमेयभा॥इउ॥धि
 तभिलेकमुसगसमु॥तुम
 पुसुसुगुननगीयन॥नसु
 मेमुठुठिककुतेते॥लेकइय
 पुपुतिमपुठव॥२३॥तभ
 दु॥मुपुपिपायकयं॥पुम
 रुयेदुमजमीसहुम॥पिउ
 वपुइमुभावेवभापुः॥पुयः
 धियायाजभिरुवेभेरुभा॥
 २२॥अरुपुपुवेरुधितेभि
 पु॥ठयेनमपुवृषितंभनेम

ध

व

उममरु जयमवकुपं॥पूमी
ममवमगागविवम॥२५
॥किगीटिनंगमिनंमरुद
मु॥मिस्सुमिडंमृषुमजंउष
व॥उनैवकुपंमडुकुल
नमरुमृषुकेरुवविस्सुम
तु॥उमिमीरुगवानवाम्मा॥३
मयापूमवेनउवालुनं
॥कुपंमरंमृमिउमकुये
गाता॥उलेमयंविस्सुमन
उममं॥यनेरुमृननरु
धुधुवम॥२१॥नवेरुयसु

३
 गी.
 म.
 १.

पृथनैवमनै॥ वमस्त्रियानि
 निवतयेनिरुगैः॥ एवंकु
 पः मरुममं नृलेके॥ मृषुं
 वरुनैव कुमपूवीग॥ मृ
 भातेवृषामामविमुमरुवे
 मृकुपंयैरभीरुमृमम
 भा॥ वृपेउकीः प्रीतमनः
 मनमृ॥ उमेवमेकुपमंय
 यमृ॥ ३७॥ मरुयउवम
 उवृमनंवा मरुवमुवेकु
 मृकं कुपंमममाममकुयः
 ॥ मुमामयमाममलीत

मने॥ कुट्टायनः मे भुवपुम
 कु॥ सुत्तनखवामा सुधुम्भा
 वपुं कुपं॥ उवमे भुम्भान इव
 ॥ ७ मनीमभिचुः॥ ममेत
 येरुतिंगतः॥ य॥ ॥ तिस्रीरुग
 वत्तवामा॥ भुम्भानमिहं कु
 पं॥ सुधुवानमियत्रम॥ मेव
 म्रुष्टिमुं कुपमु॥ निहंरुमनक
 कु॥ ॥ य॥ ॥ नहंवेरुवत्तय
 म॥ नरुनेननमेष्टया॥ म
 रुपवंविष्टे म्रुपं॥ सुधुवान
 मिमंयमा॥ य॥ ॥ रुकुट्टव

ॐ
 गी.
 १०

वामह ॥ अथ भवे विप्रे ज्ञान
 लुं संसृं मत्तुं ॥ भूवे सं
 मयत्तु ॥ म ॥ भूत्तु मत्तु
 द्दु रभे ॥ भूत्तु : भूत्तु वत्तु
 ॥ निवैरः भवत्तु ॥ यः भ
 भ भेत्तु यत्तु ॥ य ॥ ॥
 ॐ श्री ॥ ॐ ॥ ॐ श्री ॥ ॐ
 वत्तु ॥ भूत्तु यत्तु ॥ भूत्तु
 विष्णु यत्तु ॥ यत्तु ॥ श्री
 भूत्तु ॥ भूत्तु ॥ भूत्तु ॥
 ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 उत यत्तु यत् ॥ ८ ॥ भुं पदय
 भते ॥ यत्तु यत्तु भवत्तु ॥ ९ ॥
 के ये ग विदुः ॥ १० ॥ ॐ
 श्री गणेशाय नमः ॥ भयत्तु
 सुभने ये भं ॥ निहयत्तु यत्तु
 उ ॥ सुयत्तु यत्तु यत्तु ॥ सुभ
 यत्तु यत्तु भत्तु ॥ ११ ॥ ये
 यत्तु यत्तु भत्तु ॥ भवत्तु यत्तु यत्तु
 उ ॥ भवत्तु ग भत्तु यत्तु ॥ कुट
 भु भत्तु लं पूव भत्तु ॥ भवत्तु
 भु भत्तु यत्तु भं ॥ भवत्तु भत्तु

१३

सुयः ॥ ३५ ॥ प्रवृत्तिभाभव ॥
 वक्रतडितेरतः ॥ ३६ ॥ लोमे
 ठिकतरमुषा ॥ भावृकुभक्त
 मंडभाभा ॥ म्रवृकुठिवाति
 म्रः ॥ ३७ ॥ म्रवृकुठिवाति
 ॥ ३८ ॥ येतुमवलि कम् ॥
 मयिमवृमुभक्तः ॥ म्रवृकुठि
 वयेगन ॥ म्रवृकुठिवाति
 ॥ ३९ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥
 म्रवृकुठिवाति ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥
 वामिनसिवा ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥
 सिउमंडभाभा ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥

वभनसुण्डु ॥ मधिवसिन्नि
 मय ॥ निवमिधुमिभयुव ॥ सुत
 कुहंनभंसयः ॥ सुवमिदुंभभा
 णां ॥ नमकेपिमधिमिभुम ॥
 सुहृभयेगोनतते ॥ भमिसु
 धुंणनद्वय ॥ ७ ॥ सुहृभेधु
 मभकेमि ॥ भदुद्वयभेरुव
 भरुभमधिकम ॥ ८ ॥ कुच
 मिमिभवधुमि ॥ ९ ॥ सुव
 उरुधुमकेमि ॥ कदुभमेग
 भासितः ॥ भवकमललट
 गं ॥ उतः कुयतद्वयाना ॥

१३
 सु.
 गी.

चयेदि सुवम हृ मा ॥ सुवम
 नं विमिधुते ॥ पुन कुम्भे ग
 भृग सुवि रन तु रभा ॥ ०१ ॥
 म सु सु भव कुता नं मैकुः
 कम ल पवस ॥ निम भेविग
 ज सुगः ॥ मम सुः प भापः
 रुभी ॥ ०२ ॥ म तु सुः म उतं
 ये गी ॥ य उ कु सु वि सुयः
 म सु वि उ भ वे व सु ॥ दे म सु
 कुः म भे धि यः ॥ ०३ ॥ य भ
 वे वि रा उ ले के ॥ ले क वे वि
 रा उ म यः ॥ य भ म सु रु ये सु

गौ॥ मूकुंयः भमभेधियः॥०५॥
 म्रनपेक्षः सुमिदुक्ष॥ उरुभी
 नेगउवृषः॥ भक्षरभूपरिह
 गी॥ येभमूकुः भमभेधियः॥
 ॥०६॥ येनरुधुतिनकुंधि॥
 नमेमतिनककुति॥ सुठमु
 रुधरिहगी॥ रुकुभाहः भम
 धियः॥०७॥ भमः मकुंमभि
 कुंम॥ उषभानपभनयेः॥
 मीतेधूभापमः पेष॥ भमभ
 मकुंतिवलिउः॥०८॥ उलि
 निरुमुतिवेनी॥ मकुंयेय

ॐ
 गी.
 सु.
 १३

केनमिता॥ श्रीकेशः भिन्न
 ति॥ कृत्तिभात्रे धियेनः ॥ ०८
 ॥ यदुपममृतामिहं ॥ यथेकु
 धदधमते॥ सुखाजामदु
 रभा॥ कृत्तिमुतीवमधियाः
 ९॥ ७॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॐ श्रीरुद्र
 वसुती उमुपनिषद्बुद्ध
 विमुयं योगममृतीति
 सुखनमं कुरु क्रियेगे
 नमस्तुतमेष्टुयः ॥ ०९
 ॥ ॐ श्रीरुद्रावावृत्त ॥
 ॐ सरीरं केचुय॥ कुरुमि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ
 गी.
 इ.
 १५

जेउमभिविनिष्ठितैः॥आम
 जकुतवृजकुरे॥वसिउ
 वृकुमेवम॥७द्विया॥रु
 सैकंस॥पादुमेभियगेमराः
 ॥५॥७कुसुधःभापंमुपि॥म
 सुतज्ञैतपतिः॥सतकुं
 भाभेन॥मविकरमरुत
 भा॥७॥सुभनिदुमरुभुक्तिं
 व॥महिंभाकुतिगस्तवभा
 सुमदेभाभनंमोमं॥मुदभा
 इविनिगजः॥१॥७द्वियजै

धूर्तैरगुं॥भनदसुगसचम॥
 साकभुहुएगवृष्टि॥सुःप
 मेधात्रमसनभा॥३॥अभक्ति
 रनकिधुसुः॥धुत् सारगुजा
 रिधु॥विहं समभमिदुत्तु॥मि
 धुनिधुपपतिधु॥७॥भसीमा
 नहयेगनरुक्तिरवृष्टिमा
 रिनी॥विविक्तसमभविह्व
 भगतिज्ञनभंभमि॥०॥अष्ट
 क्लृप्तनिह्वं॥उत्तुसुनाच
 समनभा॥पउत्तुनभिदि
 धुत्तु॥भसुनंयमंउहृषा॥
 ००॥हृयंयउत्तुमि॥य

ॐ
 गी.
 ॐ
 १०

सुख भउ भउते सुन मिभउं
 सुन मिभउं वरुन नभउ नभ
 सुमउते ॥०१॥ भवउः पलि पा
 मंउडु वउते कि सरे भाप भा ॥ भ
 वउः सुति भले के ॥ भवभा वउ
 ति धुति ॥०३॥ भवे मि य गु
 ठ भं ॥ भवे मि य वि वलि त भ
 भ भं भव रु सु व ॥ नि गु
 ठे कु म ॥०२॥ उरि र उ सु कु
 व भमं सर भव म ॥ भु कु द
 उरु वि ल्ल य ॥ सु र भं म ति के
 मउउ ॥०५॥ भवि कुं म कु ते
 भ ॥ वि रु कि भिव म भिउ म ॥

ग ८

कुतः कुतः कुतः ॥ गभिषुपुत्र
 विष्णुः ॥ ॐ ॥ सुतिथं भपितः सु
 ति भुभमः परमसुते सुनं सु
 यं सुनगभं सुकिमवभृषिषु
 भा ॥ ॐ ति कुरुं तषा सुनं सुयं
 मेकुं भमभतः भसु कुपत
 विष्णुय ॥ भसु वायेपय सुते
 ॥ ०३ ॥ पूततिपुनयं सैव विष्णु
 नमीतु कवपि विकरं सु
 गुप्तेव विष्णुपूततिभभ
 वाना ॥ ०७ ॥ कटक र क
 कुतः कुतः पूतति सुते ॥ ५

ॐ
 गी.
 ३
 ११

नमः भगवतः पानं कुरुते
 उरुमृते ॥९॥ पुरुषः पूरति
 भुक्तिं कुरुते पूरति रज्जुना
 करं रज्जुना भुक्तिं भगवते
 निरुद्धं भुक्तिं ॥१०॥ उपसृष्टं भगवते
 उरुमृते कुरुते कुरुते भगवते
 भगवते भगवते भगवते
 नमः भगवते ॥११॥ यत्तु वं वेति
 पुरुषं पूरति रज्जुना
 भगवते भगवते भगवते
 भगवते भगवते भगवते
 भगवते भगवते भगवते
 भगवते भगवते भगवते

न भुवः भूतयेगेन कम्
 येगेन साधये ॥१३॥ भुवः भूतये
 भूतयेः भूतये भूतये
 उ उधिसातिउगभूतये भूतये
 भूतिपरायणः ॥१४॥ यव
 भूतये किम् भूतये
 वराहभूतये भूतये
 भूतये उधिसातिउगभूतये
 भूतये ॥१५॥ भूतये भूतये
 भूतये भूतये भूतये
 विनभूतये विनभूतये यः

ॐ
 गी.
 इ.
 १३

सुतिमयसुति॥१॥मंयसुतिम
 वरु मभवभित्तभीसुगभा
 नलिनभूद्वनानं उतेय
 डिपरांगडिभा॥१३॥युनहै
 मकझा सि यभा निभव
 मः यःयसुतिउवाङ्गन भक
 डुरंमयसुति॥१७॥यमङ्कड
 पुषगुव भकभुभययसुति
 उतावमविभुरं वृद्धमं
 पसुतेउता॥१७॥मृताकिड
 विनुं व डुरभाङ्कयभव

यः मरीरभुषिकेकुय नक
 गेडिनलिपुते॥३०॥ यषम
 वरातंभेकू रुकसंनेप
 लिपुते भवश्वकीतेरुज
 उषाङ्गनेपलिपुते॥३१॥ यष
 पूकसयटुकः तङ्कुलेकमि
 भंगविः कइ कइ उषाङ्ग पू
 कसयडिठरता॥३२॥ कइ
 कइ लुयेरव भतुरल्लम
 कृषा कृतपूतडिभेकंस
 यविमदडिउधरमा॥३३॥
 ३॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥

६

ੴ
ਗੀ.
ਸੰ
੧੭

ਤਿਖੰਡਕਯਃ ਪ੍ਰਵਕ੍ਤ੍ਵਾਮਿ ਲੂਨਾ
ਨੰਦਲੁਖਤੁਮਮਾ ਯਤ੍ਤ੍ਵਾ ਮੁਨਃ
ਮਰੇ ਪਰੰਮਿਸ਼੍ਰਿਮਿਤਿਗਤਾਃ ॥੧੦॥
ਤਸੰਦ੍ਰੁਖਮਧਾਸਿਤੁ ਮਮਮਾਠ
ਕੁਮਾਰਾਤਃ ਮਨੋਧਿਨੰਦਯ
ਤੁ ਪ੍ਰਲਯੇਨਵ੍ਰਥਤ੍ਰਿਸਾ ॥੧੧॥

भभयेनिद्रुजसूद्रु उभिज्ञं
 रुद्रभृजभा मभूषःभवकुड
 नं उडेरुवडिऊरुड॥७॥
 भवयेनिधुकेडुय भुडुयःभं
 रुवडिचाः उभंरुद्रभजसु
 नि रजेवीराधूरुःधिडा॥भा
 भवंरुद्रभुमउडि गुलःधूरु
 डिभंरुवः निवप्रडिभजरा
 रुद्ररुद्ररुद्रिभभृयभा॥पा
 उडभवंनिद्रुलडु डुकम
 कभनभयभा॥भापभंरुनव
 प्रडि रुद्रभंरुनभयभा॥

५ छि
गी

गरीगगाङ्कविमि इल्लम
 गमभसूवमा उविवप्राति
 केते कम्भसूवमरुदिनमा
 उमभसूवमरुविमि मेनभव
 रुदिनमा पूमारुलभुविमि
 नि भुविवप्रातिरुगड॥३॥
 रूवभवहउउमः पूमारुम
 रुयडुउ भुविमयिमारुयति
 रराङ्कमरुकारड॥७॥ररा
 भुविमरुय महुंठवडिठर
 उ रराभहुं उमभुव उमभ
 हुंरराभुव॥१०॥भवसुव

धर्मजन्मि चूकामउपरयउ
 स्तनंयमाउमविष्टि सिव
 सुंभदुमिदुउ॥००॥लेमःपु
 वदुिगगमः कद्रुमममः
 ज गरासुतानिरयउ वि
 वसुकरउद्रु॥०३॥अपूक
 मेपूवदुिस्व धूममेजावम
 उमसुतानिरयउ विवसुकर
 मनन॥०३॥यममसुपूव
 सुउ पुलयंयातिमेकद्रुता
 उमेउमविमेलैक नमल

सि
गी.
मं.
३०

चुडियसुते॥०५॥रणमिधूल
येगद्व कम्भसिधुस्यते॥
उषाधुलीनभुममि भुमयेनि
धुस्यते॥०५॥कम्भः भुतत
भुतः भाविकं निभुलेल
भा॥०५॥भुतत भुतत
रणमेलेरुपवम धुभासि
जेतममे रुवतेरुभचम॥
०५॥भुतत गसुतिभुतत भ
चुडियसुतिगणभा राधव
गुचुतत भुतत भुतत

उमभा॥०३॥ ननु गुह्यः कुरु
 रं यमसूक्ष्मपयसुति गुह्य
 सुयगंवेति मसूवंभेतिगसू
 ति॥०७॥ गुह्यं ननु नतीहरी
 नु जीमिहममसूवना एवम
 वृणागसूः विभिन्नेभ्यः मसू
 ति॥३॥ अ ॥ कैलि
 न्नीभूति ननु नतीहरी
 भूति किभागरः कषंसेतं
 भूति ननु नतिवतुति॥३०॥
 मी ॥ पूकासेमध्व

ति

ॐ
 गी
 सं.
 ३७

तिम भेकमेवमथा नुव ननु
 विमभूचतानि ननिचतानि
 ककुति॥११॥रु भनिवम
 भीने गुलेदेनविमलुके गु
 उवचतुतःहव येवतिभु
 तिनेकुते॥१२॥मभसःपम
 पःभु मभलेधमककुन
 रलुधियाधियेपीर भुलनि
 रुकुमभुतिः॥१३॥भनपम
 नयेभुले भुलेभिदुगियकये
 मवारभुपरितृगी गुउती
 तःभउसुते॥१४॥भंसयेव

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
उ म ग उ म उ म उ म उ म
वृक्ष कृपाय क म उ ॥ ७७
वृक्ष नेदि भूति भूत म म
उ म उ म उ म म म उ म
म म म म म म म म
क म म ॥ ७७ ॥ ८ ॥ ८ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
म म म म म म म म
ग म म म म म म म
वा म म म म म म म म

भमकुम्भमेष्टायः॥ ५॥

०२ सीरुगावाचमा॥

ॐ ति कुम्भभनभयज्ञाय भ
यं री. सुकुम्भद्रगृयभा कं
३३ भियभुमलानि यभुव
ममवेरुविता॥०॥म
येवेवंप्रभुतासुभुमाय
गु~प्रवृत्तविषयभू
लः प्रणम्यभुलातुम्
तुतानि कम्भनवर्त्त
निभनधुलेके॥१॥नकु

पममुद्रउवेधिलहउ नरेनम
 किउममभुतिधु नसकुमेनं
 भविउरुभुलममसमुल्ल
 रुनसिद्ध॥७॥उउपमंतउ
 विभानितुं यमिनतावि
 वउतिउपः उमवमसुंपन
 धेपुपसु यतःपुतिःपुमउप व
 गली॥२॥निद्रावमेजगितम
 रुमेध सपुद्रुनिट्टाविनिवउ
 कभः सुसुचिमःभुःभापमः
 मसु नसुहमुमःपरमवु

ॐ
 गी.
 धं
 ३२

५

पंडित ॥ ५ ॥ नतसु भयते भूरे
 नमसा नैव पावकः यस्तु न
 निवृत्तु उस्तु भय रभं भम ॥
 भमैवं से री व ले कं री व
 उः भन उतः भन ध पु नी मि
 या ॥ पुन ति भु निक द्वा ति
 ॥ १ ॥ म गी रं य रु व पे ति य
 सा धू रू भ डी सु रः गृही द्वे
 ता नि भं य ति वा यु न द्वा नि
 वा स या ता ॥ ३ ॥ मि तं स द्वाः भु
 स नं स र भ नं ॥ ५ ॥ मे व मा

नृपिधु यमनसुयं विधयन्म
 भवते॥७॥उत्तमभुंभित्वा
 पि कुल्लनंवागुल्लितमा वि
 भुल्लननपसुति पसुतिस्लून
 मकुभः॥०॥यततेयेगिरस्ते
 नं पसुतुत्तवभित्वा य
 ततेपुल्लतत्तने नंनपसुतु
 तेतमः॥००॥यल्लित्तिहगतं
 तरो रागकुभयतेपिल
 भा यल्लित्तिभयल्लित्ति त
 तुरोविस्तिभभकमा०७॥ग

ॐ
 गी.
 पं.
 ३५

भविष्यस्य कुतानि ठारयाभुज
 भेगभा पशुभिर्मोषणीः भवाः
 भभेकुङ्कुरभाङ्कः ॥ ०३ ॥
 जेवैस्वानगैकुङ्कुरा पूष्णिचं
 दभासितः पूष्णिचानभभाषु
 कुः पशुभुवंसकुविठभा ॥ ०४ ॥
 भवभुमायंकुम्भिविषये
 भतुः भूतिस्तनभयेनंम
 वेरैस्त्वभवेस्त्वगभवेवेस्ते
 वेरुत्तुस्ते कविर्मेवमात्म
 ॥ ०५ ॥ सुविभोभुमभेलेक

कृष्णकृष्णस्वस कृष्णमव
 कृष्णकृष्ण कृष्णकृष्ण उम्
 उ॥०७॥ उतुमःपुनपमुतः
 परमकृष्णमहः येलेक
 यमविमु विरुतुवृयरेकः
 ॥०९॥ यमकृष्णमतीते
 मकृष्णमधिमे उमः सुतेभि
 लेकवेम म पुषिउपुनयेउ
 मः॥०३॥ येममेवमममुते
 मनातिपुनयेउममा ममव
 विमुरातिमं भवतुचैवक

चि
 गो
 धं
 ३

ग३॥०७॥७३तिगुह उमंसा
 मुं भिरुभुंमयानय्य प३
 सुसुवसिभासु वूउकडस
 क३३॥७०॥**ति३ मीकगव**
मीभयविधु वूक विमू
यं येगसा सु मीत लू
नभंवापमधे उमयेगेनम
पासुभरुयेपुयः॥०५॥३
मीकगवा नव सा॥ ७॥
 ति३मयंमवभंसुसिहूनयेग
 वृसि३तिः कनरुभसुयसु थं

३

पृथग्भुपसुल्लवभा० सुदिभा
 महभक्तैः भुगाः सत्रिपैसु त्रभा
 भा मयकुडैधलेलवं भा
 वंहीरसायलभा॥९ उरः
 कभापुतिः सोमभ सुजेनति
 भाविता कवतिभभरं कैवी
 भक्तिरुडैभुकरड॥१० रंभेरु
 देविभानसु रेणः पानधुमेव
 म सुल्लनसादिरडभु पात्र
 मभरुभभरीभा॥११ रंवीभं
 पविभेकाय निवकायाभरीम
 दु॥भासुमः मंयरं कैवी भक्ति

१५

ॐ
 गी.
 ३१

एतेभिर्वाक्यैः ॥ ५ ॥ श्रीकृष्ण
 जैलेकंभिः कैवंसुभरप्रवस
 कैवेविभुरसःप्रेत सुभरंय
 ऊमेसुग ॥ १० ॥ धृवतुंसन्वि
 तुंस एतन्नविमुगभरः ॥
 सोमंनपिमेमरेमेनमहंते
 धविमुते ॥ ११ ॥ सुभतुमभूति
 धुंते एगमद्वरनीचरभा
 मपरभरमभुतं किमहं
 महेतुकभा ॥ १३ ॥ एतंसुधि
 भवधृष्ट नधृष्टनेल्वस्य
 पूरुवतुगकम् ॥ १४ ॥ कयय

एगडेजित ॥७॥ कभभसि
 टमयुरं रभभनभरुसिः
 भेजसुजीवभसुज युवउउ
 सुमिवृताः ॥७॥ मित्रुभाधि
 रिभेयंस थूलयउभभसि
 उः ॥ कभेथकेगयभा ए
 उवृमितिनिष्ठिताः ॥७०॥
 असाधससउवसु सुभेरे
 पयगयः रंजवृकभने
 गाऊ भट्टयेनऊ भफुय
 न ॥७१॥ एमभसुभयलस
 भिरंभूयुभनेरयभा ॥ ७२

ॐ
 गी.
 चे.
 ३३

मभीरुमभिमे रुविधुतिप
 उचनभा॥०३॥ सुमेभया
 यतः मङ्गु हनिधुमिथरा
 नधि रं सुरेयमयं लेगी
 भिसेयं वलव भुपी॥०४॥
 सुरेयि नव नभि केवुभि
 ममुमेभया॥ यकु मभुभिमे
 मिधु उडुल्लनविभेजिताः
 ॥०५॥ अनेकमिडुविरुतु ३
 मेजलमभाचुतः धुभकु
 कभनेगयप उडुनरक
 सुमे॥०६॥ सुडुमभुविताः

५१
 अथ एतन्मन्त्रमस्मिन्
 सप्ततन्त्रायस्मिन् मन्त्रवि
 शिष्टवक्त्रम् ॥०१॥ अथ ह्युक्तं
 तल्लक्षणं कर्मैकैः पञ्चमं मि
 त्तः मन्त्रायस्मिन् यस्मि
 यन्त्रे ह्युक्तः ॥०३॥ तान्त्रिकं
 विधितः ह्युक्तं मन्त्रायस्मिन्
 एतन्मन्त्रं विधातुं भूमिभूमि
 भूमिभूमि वयेनिध ॥०६॥
 भूमिभूमि विधातुं भूमिभूमि
 भूमिभूमि विधातुं भूमिभूमि

वि
गी.
वे

३७

५१

उये उयेयान्तिपुमंगतिम् ॥१७॥
द्विविपन्नरकमुक्त सुवर्ण
मनभाङ्गनः कभःकेणमुषा
लेन भुम्भुत्तुयत्तुत्तु
॥१८॥ पत्तैविभक्तः के उये
उमेसुवैभित्तुः सुवर्ण
ङ्गनः सुय ॥ भुत्तैयत्तुपंग
तिम् ॥१९॥ यत्तुभुविपिभक्त
ए वत्तुत्तैकभक्तः ॥ न
भभित्तुभक्तयेति नभापेन
पंगंगतिम् ॥२०॥ उभक्त

मुंयुभांउ कदाकदवृव
सिउते इडमभुविणनेउं

कद्रकडुभिज जमि ॥ १२ ॥ ३

ॐ ॥ तिस्रीं गवल्ली ॥ ३५ ॥

विष्णु विष्णु या योग

सुमीतधुनेनभवाकै

सामर्थ्यद्विगुणभाष्यम्

मेष्टुयतः ॐ ॥ शुभुनउव

मा. ५॥ ५॥ ५॥

उदयसाभूविणिभङ्गुष्टायसा

उत्सृष्ट्या विताः उत्पत्तिः

ॐ
ग्री.
ॐ

उकतधु मद्रुमजेगणभु
मः॥०॥विनीठम वा उवण॥दिवि
णरुवडिसुसुमे दिनंभाभु
वर मद्रुकीगणभीमेव
उमभीमेडिउंमु॥१॥म
इवकुपमवभुसुसुनक्ति व
रउ सुसुभयेयंपुनमे य
येसुसुःभापवमः॥आयराउ
मद्रुकमेव उरुवकुंमिग
गभाः पुताकुंउगंमुव
यराउउमभाकाः॥२॥
मसुपुविदिउं उभुउ

येउयेमानः रुभूजकूर

भंयकुः कभगगवलविः

॥५॥ कसयकुः मरीरभुं उ कुउमभमैउम.

विष्टु भगनिसुयाना ॥ सु भंमवउ. मरीरभुं

जगभुधिभवभु रिविठेठ

वतिप्रियः ॥ सुमुधुभुषरुनं

उधंठेरुभिभंमु ॥ १॥ सु

यः भववलगेरु भापभूति

विवचनाः रभुः प्रियः ॥

गरुमु सुजगः भादिक

प्रियः कद्वलवउदक

वि
 गी.
 ७०

उीरुउरुविमणिनेः मुज
 गगणमुमुषुःपमेकम
 यधुमः॥७॥याउयभंगउ
 रमं पुतिद्विउंमयउ उ
 सिधुमपिमामपुं नेणवउ
 ममपियम॥१०॥मृललक
 सिठिदरे विणिमृधेयउ
 हाउ यधुवृमवतिमरः
 मभाणयमभादिकः॥१००॥
 मरिमवयउलले मृध
 उमधिमवयउ उरुउरु

वडसुप्र उंयसुंविमि
 काशभभा॥०७॥विमि
 नभमुःत्रं भवुजीन
 भमसिभा मसुवि
 जिउंयसुं उभमंयवि
 ॥०७॥विमि
 मुगुरुप्रासु पुसुंसे
 मभसुवभा वसुमद
 भदिभम मगीरंउ
 उमुउं॥०८॥भरुग
 कं वहुंमहुंयिजिउं

ॐ
 गी.
 म
 ७७

यत्न मपुयानुभवे वस
 म यं उयउमृते ॥०५॥ भवः
 प्रमरुः भिभुत्वं भेनम
 क्विविग्नः रुवभंसु
 क्षिगिहृत्त उयेभानमम
 मृते ॥०६॥ मृदुयानु
 उयं उयभुद्विविपंनरः
 मलकामिदिदुः
 भाविकं परिमृते ॥०७॥
 मङ्क रभानपुस्तं उये
 मभुनमेवयत्त रिये

उमिजेपेकुं गणभंसमभपूव^ल
 भा॥०३॥भुमगुज७कुनेय
 द्दीमया क्रियतेउपः पर
 भेदुमनकुं व उकुभमभम
 हउभा॥०७॥रुतवृमिदिय
 मने मीयतेउपकारिल
 रुसकलेमपादेम उमूने
 भादिकं भुउभा॥५॥यउप
 दुयकारकुं ठलेभमिसु
 वाधनः मीयतेमपरिलि
 धं उमूणभममहउभा
 ॥१०॥मरुसकलेयमून

६
 मधुहस्तसमीयते समस्त
 मस्तुते उक्तमममस्तुते
 भा॥११॥उतेतुमितिनिर्दिष्टे
 रक्तमभिविष्टः भुतः वद
 उमुनवेमस्तु यस्तुमवि
 दितः धर॥१३॥उममे
 भित्तुमस्तु यस्तुमविविष्टः
 धुवतुतेविष्टनेकुः भुतं
 वस्तुवमिनाभा॥१२॥उमि
 नतिमस्तुयदलेयस्तुतपः
 क्रियाः मन्त्रियास्तुविवि
 णः क्रियतेभेककमिष्टिः

वि
 गो
 म.
 १३

॥१५॥ ममूवेभापठवेम
 मरिहृवउतुयष्टउ ५
 ममुकमलिउवा मसुषः
 पाऊयष्टउ ॥१॥ यमू
 उपमिरुनेम भित्तिम
 छिडिमेमुत कम्मवे
 म रुकीयं मरिहृवठिणी
 यउ ॥११॥ मसुसुयल
 उंरुतं उपमुपुंताउंम
 यउ ममरिहृमुउप
 ऊ नमउकुट्टनेऽका

वि
 गी.
 म.
 रु
 ७

॥१३॥ अति प्रीति गव

झीठ भुपविपदुवुझी

मुयं येगसाभूमिती

भूज्जमं वरं मूझुगु

विदु मेनभमभु रुमे

पुयः ॥०१॥ अज्जुनउव

विमहभभूमज्जकजे। उ

इमिस्सुमिवेदिउम। उ

गभूमरुधीकेस ॥५॥

षकैमिनिभुमन ॥०॥

प्रीति गवामर कभु

五

ॐ
गी.

म.
रु.
७५

यस्तु सान्त्तपः कस्तु नृ
सुं कस्तु मेव उता यस्तु
सान्त्तपस्तु व ॥ पावन
निमनीधि ॥ भा ॥ पा ॥ प
तात्तु पि उ कस्तु ॥ मं
सं उता लानि म ॥ क
उता नीति मे पाता ॥ वि
सुतां मस्तु मस्तु म ॥ ॥
नियत मुस्तु मस्तु म ॥ क
म ॥ वे य य मुता ॥ मेता
उता परिताग ॥ मुता म ॥

परि कीर्ति उः॥१॥ सुपं
मिह वसु म कय ली
मरु या तु रू ता मरु त
गुण मं टा गं नैव टा ग
ढले लरु ता ॥३॥ कद
मिह वसु म नि उं क्रिय
उत्त न ॥ मरु टा ढले
मैव ॥ मरु गः मरु के म
तः ॥७॥ न सु धु ता स लं क
म ॥ कु मले न न धरु त
ता गी मरु म म वि धु ॥ म

छि
 गी
 (म.
 रु.
 ७७

णवीसुत्रमंसयः॥७॥
 नहिरेककृतमहं उक्तं
 कद्रष्टमेवतः यमुकम
 छलहागी भट्टागीट
 किपीयते॥००॥मुनिधु
 मिधुमिसुम दिविपंक
 मः॥छलभा क्वट्टट
 गिनंयुट ननुमंटाभिनं
 तामिता॥०१॥यष्टिमाति
 भजावगे कारुनिकि
 पमे मष्टुटातुयेडाति

भिस्रयेभवकम् ॐ भा
॥०७॥ अणिधुनंतवक्का
करं मयवगिण्मा वि
विणस्यपवक्काश्चैवं
कैवायपकुभभा ॥०८॥ स
रीगवायनेठिदकु म्भ
रठते नरः सुयेवाविप
रीतंवा भक्तुतेतमुल्ल
वः ॥०९॥ उतैवंभतिकु
र भाद्रुनंकेवलंतुयः
पसुहृत्तवक्रिडा नम
पसुतिमुद्रतिः ॥१०॥ य

ॐ
गी

शु.
रु.
७१

भुजलसूतेठावे वस्त्रिद
भुजलिपुते जडाधिभउ
भांजेक वजत्रिननिब
पुते॥०१॥सुनं सुयंभरि
सुता दिविणकममैम
न करं कककतुगिदि
विणकममसुतः॥०३॥
सुनं ककमकतुम रिण
गुठेसुतः पेसुतेगुम
सुने यषावसुततुधि
॥०७॥भवकुतेयै नकं
ठवभवुभीरुते सुवि

रुक्मिणीविठ्ठल उद्भव
विभाषिकभा॥१॥५॥
नउयद्भुतं नानरुवा
रुषासिपुत्रा वडिभवे
धरुतेय उद्भवंविद्विग
शासभा॥१०॥
मेकभिक्तदेभक्तुमले
उकभा अउद्भुतवम
लंम उद्भुतमममम
रुतभा॥११॥
नियतेभ
नरुजित भगवत्पुत्रः

ॐ
 गी
 सु.
 सु.
 ७३

सतगुरु॥ मूढलपूषु
 कम्॥ यतुङ्गद्विकभसु
 उ॥७७॥ यतुकभेपु
 नकम्॥ माण्डुन
 वापुनः॥ क्रियतवद
 लायभं॥ उमृणभ
 भमृणुतमा॥७८॥ सु
 तवद्वंरुयंदिभा॥ भन
 वृक्षमयोमयभा॥ भेद
 मरुतुतेकम्॥ उतुग
 भममृणुतमा॥७९॥

भक्तभङ्गे नन्दवामी पद
कुलभभङ्गितः भिद्युमि
सुवि विकारः कटु भङ्गि
कउमृडा ॥ ७० ॥ रागीक
मृदलपूषु लुहृदिभ
कैसुमिः जहमेका
विउः कटु रागभः य
विकीविउः ॥ ७१ ॥ अङ्गुः य
भूततः भुङ्गः मङ्गेनू
डिकेलभः विधासीसी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥ यथा यथा ॥ १३ ॥ यथा यथा ॥ १३ ॥

कदं माकदमेवम सुयष
 वदुरनति वसुःभापा
 ऊगएभी॥७०॥मृणंण
 मभिडिया भट्टउतमभाव
 उ भवाऊविपरीतंम
 वसुःभापाऊतमभी॥७१
 एट्टययणयते भवःपु
 ल्लियरियाः येगोनवृदि
 मारिष्ट एडिःभापाभा ७
 द्विकी॥७३॥ययाउणमक
 मऊ वृट्टणयतेल्लन

ॐ
 गी.
 म. ३
 क.
 ६००

प्रभङ्गनलकक्षी पतिः
 भाषाऊगणभी ॥३२॥ य
 यभ्रुंरुयंमेकं विषां
 मरुमेवम नविभाङ्गतिरु
 क्कण पतिः भाषाऊगणभी
 ॥३५॥ भाषाङ्गिनीविणं
 मरुमेवम उरु मरुभा
 मउयउ रुः पाङ्गुनरासु
 ति ॥३७॥ यउरुगुविधमिव
 परिममउयमभा उरु
 भाषाङ्गिनीविणं

गोग्रुवाणिष्टं वैसृकम्
 भुक्तवणभा परिमद
 कृकंरु सुसुभंभिभुक्तव
 रणभा॥२॥ सुसुक्तम्
 ठिगुतः भंभिष्टिलठुत
 गः भुक्तनिगुतः भिष्टिं
 यावविक्तुडितसु॥२॥
 यतः भुक्तुडितुतं येन
 भवभिष्टुतभा भुक्तम्
 उतभक्तु भिष्टिविक्तु
 डिभानवः॥२॥ सुयामु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ
गो.
म.
०-९

ॐ विष्णुः परमेश्वरः
 धि उता भक्तियुतं कर्म
 उच्यते त्रिकल्लिखमा ॥
 ॥॥ भक्त्युतं कर्म के तु य
 भक्त्युतं कर्म के तु य
 रभुक्तिर्ये च पुनरापि
 विवाचुतः ॥ ॥ भक्त्युतं कर्म
 भक्त्युतं कर्म के तु य
 भक्त्युतं कर्म के तु य
 ॥॥ भक्त्युतं कर्म के तु य

ॐ उवाप्रेतिनिवेणमं भ
भमनैवकेतुय निधुः
नमुयाधरा॥५॥ वसुवि
सुमुयायुक्ते पटकुनंनि
यभूम सकृमीलियभुक्ते
गगमेधोवुरुभूम॥५॥
विपिकु मवीलधुमी य
उवाकायभानमः पुनये
गयरेनिटुं वैरागुंभम
धामिउः॥५॥ मज्जुवर
लेपुं कभंकेणपरिरु

ॐ
गी

सु
र

०३

म विभसुनिभमः सत्रे
ब्रह्म कृपाय कल्पते ॥ ५ ॥
ब्रह्म कृपाय कल्पते न मे
मतिन कल्पति भमः म
वैश्वरूपे भमः किल
उपगमा ॥ ५ ॥ म
दिरनति यावत्तु
उत्तः उत्तमः उत्तमः
व विमते उत्तमः ॥
५ ॥ म च कल्पति भमः
उत्तमः भमः ५ ॥

मारुवपेति साचुतंपर
 भवयभा॥५॥मिउभाभव
 कम्भि मयिभतृभुभद्वः
 रुद्रियेगभुपामिह भस्त्रिउः
 भउतंठवः॥५॥भस्त्रिउःभ
 वेमजालि भदुभारुतुति
 धुमि म्रषमद्वभेनरुग
 त्रमेधुमिविनरुमि॥५॥
 यरुनरुगभामिह नयेधु
 उतिभतृम भिषुधवृव
 भायमु पूततिभुनियेधु

ॐ
 गी
 सु.
 रु.
 ००२

डि॥५७॥ भूठ वल्लन के त्रुय
 रनिद्रुः भनकद्रु कडुनेसु
 भियनेद्रु रिष्टुमु मेधि
 भन॥१०॥ रें सुद्रः भवकुडा
 नं रुद्रुमेले नतिष्टुति इ
 भयद्रुवकुडानि यद्रुद्रु
 निभायया॥१०॥ उमेवसर
 ॐ गसुभवरुवे नरुगड
 उद्रुभरुद्रुगं सतिं भुनं
 ध्रुधुभिसावतमा॥१०॥
 डिउद्रुनभापुडं गुह्यु

हृत्तयंभय विभुसैतुसमे
म यषसुभित्वाकु ॥७३॥ भवसुह
उमंहुयः सुभमेपरमंरमः
उधैमिमंरुमिति उतेवद
मिउतिउम ॥७४॥ भननव
भसुते भसुलीमंनभभु
भमेवैधुमिमंरु पृतिर
धियेमिम ॥७५॥ भवण्डुयि
हृत्त भमेकंसरं वृत्त म
कंरं भवपायहे मेद्विधुमि
भसुमः ॥७६॥ उमंतेनउयभु

ॐ
गी
शु
रु
०५

य नरुत्तायकमासन नम
मुसुभवेसु नमभयेहमुयति
॥१॥ यउरं धरं गुहं भमु
कुशुकिणभुति उकिं भयिप
गंतु भभवेष्टुभंसयः
॥१३॥ नमउभन नमुष क
सिनेपियतुमः रुविउन
मभेउभ मनुःपियउगेकुवि॥
॥१॥ मनुषुतुमयउभं पकुंभं
वारुभावयेः॥ नयल्लुनउता
न मिधुःभुमिडिभभतिः १॥

मृश्वाननभयसु मृश्वया
 मृधियेनरः मेधिभक्तः सुक
 लेक च पुष्यादुष्टकम्
 भा॥१०॥ कश्चिन्मृतसूतं धक्त
 इयैकगुणं मृतं कश्चि
 मृश्वानभयः पूषुमुण
 लय॥११॥ **मृश्वानवासा**
 नष्टे भयः मृतिद्वय उदुमा
 मृश्वयामृत मित्रेभिर्गतम्
 दैतः कश्चिन्मृतं मृतं वा॥१२॥
मृश्वयामृतम् इदं दैतं

ॐ
गी.
ॐ
ॐ

ॐ वृ॥ पाऊमुम्भकुनः
भंवा रुमिभमंसेध भमुतेने
भळदुमा॥१२॥ वृ॥ भुमा
रुमुतव नतमुलभलपर
भा येगेयेगेसरुधु ॐ
य ककुषतः भयभा॥१५॥ गण
मंभुटमंभुट भंवा रुमिभम
मुतभा केमवाज्जयेः पुं
लुभुमिभमुलुः॥१॥ उ
मंभुटमंभुट कयभतुमु
उंलुः विभयेमभळर

